DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-5,
TREATMENT OF OBESSIVE COMPULSIVE DISORDER
LECTURE-48

मनोग्रस्ति बाध्यता विकृति का उपचार

TREATMENT OF OCD

OCD के उपचार के लिए कई तरह के चिकित्सीय प्रविधियों का प्रावधान किया गया है जिसमे निम्नांकित तीन प्रमुख है –

(1) **मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (PSYCHOANALYTIC THERAPY)**
(2) **व्यवहार चिकित्सा (BEHAVIOUR THERAPY)**
(3) **औषध सिद्धांत (DRUG THERAPY)**

इन सबों का वर्णन निम्नांकित है –

(1) **मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा**-इस तरह की चिकित्सा में रोगी के अचेतन मन में दमित मानसिक संघर्ष की पहचान करने की कोशिश की जाती है |इस चिकित्सीय प्रविधि में रोगी के सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाओ का विस्तृत विश्लेषण किया जाता है और उसके मानसिक संघर्ष की उत्पत्ति के कारणों में उसकी सूझ विकसित की जाती है| रोगी को रोग के कारण की उत्पत्ति में सूझ विकसित हो जाती है ,रोग के लक्षण लगभग समाप्त होते दिखते है| लॉधलिन (LOULAUGHLIN 1976) के अनुसार OCD के उपचार में मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा अधिक प्रभावी सिद्ध नहीं हुआ है क्योंकि इस विधि में रोगी के सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण में वर्षो का समय लग जाता है और उसके बाद भी उसका कोई ठोस नतीजा नहीं निकलता है |

(2) **व्यवहार चिकित्सा** –OCD के उपचार में व्यवहार चिकित्सा की भूमिका काफी सराहनीय रही है | व्यवहार चिकित्सा के तीन प्रविधियों अर्थात मॉडलिंग ,फ्लडिंग तथा अनुक्रिया निवारण को संयोजित कर के उसका उपयोग OCD के उपचार में सफलता पूर्वक किया गया है | OCD के उपचार में व्यवहार चिकित्सा के इन तीन प्रविधियों

को संयोजित कर के उपयोग करने से सम्बद्ध छह नियंत्रित अध्ययन किये गए है |ये अध्ययनकर्त्ता है –रैचमैन ,हाजसन एवं मार्क्स (1971), हाजसन,रैचमैन एवं मार्क्स (1972), रैचमैन , मार्क्स एवं हाजसन (1973),रोपर ,रैचमैन एवं मार्क्स (1975),मार्क्स एवं रैचमैन (1978), साल्जमैन एवं थेलर (1981)|इन तीन प्रविधियों का संयुक्त उपयोग बार – बार हाथ धोने के बाधित व्यवहार को दूर करने में अधिक सफलतापुर्वक किया गया है |सामान्यतः इस तरह के बाधित व्यवहार से संबद्ध मनोग्रस्ति चिंतन यह होता है की उसका शरीर कुछ जीवाणु या विषाणुओं से संदूषित हो गया है |इस लक्षण में इन तीनों विधियों का संयुक्त उपचार इस प्रकार किया जाता है – इसमें पहले रोगी यह देखता है की चिकित्सक अपने आप को किसी प्रकार के गंदगी से संदूषित कर लिये| यह मॉडलिंग का उदाहरण हुआ | इसके बाद रोगी को अपने पुरे शरीर पर इस गंदगी को फैलाकर खूब रगड़ने के लिए कहा जाता है |यह फ्लडिंग का उदाहरण हुआ| फिर उसी अवस्था में बिना उसे धोये या साफ़-सुथरा किये वह कुछ घंटो तक अपने आप को रखे रहता है |यह अनुक्रिया निवारण का उदाहरण हुआ | इस तरह

से दर्जनों सत्र में रोगी को अपने पुरे शरीर के ऊपर गंदगी को फैलाकर बिना उसे धोये या साफ़ सुथरा किये घंटो तक बैठने के लिए कहा जाता है |इसका परिणाम यह होता है की संदूषण का मनोग्रस्ति चिंतन धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है और दिन-प्रतिदिन की गंदगी में बार-बार हाथ धोने का बाधित व्यवहार भी कम हो जाता है |उक्त छह अध्ययनों में यह पाया गया की करीब OCD के दो-तिहाई रोगियों में इन तीनो प्रविधियों के संयुक्त उपयोग से रोग के लक्षण समाप्त होते पाए गए है स्पष्ट हुआ की OCD के उपचार में व्यवहार चिकित्सा एक काफी उपयोगी चिकित्सा विधि साबित हुआ है |

(3) **औषध चिकित्सा** –OCD के उपचार में कुछ औषधो के गुणकारी प्रभाव पड़ते देखा गया है |क्लोमीप्रेमाइन एक ऐसी ही औषधि है जिसके सेवन से OCD के समाप्त होते दिखते है | क्लोमिप्रेमाइन एक विषाद विरोधी दवा है जो सेरोटोनिन के पुनर्वापसी को रोकता है |दर्जनों अध्ययन ऐसे किये गए है जिनमे देखा गया है कि क्लोमिप्रेमाइन के कुछ दिनों तक सेवन से मनोग्रस्तता समाप्त हो जाते है तथा बाध्यता आसानी से कम हो जाते है |फ़ोआ एवं कोजाक (1993) के अनुसार क्लोमिप्रेमाइन द्वारा

उपचार किये जाने पर OCD के लगभग 50 से 60% रोगियों में मनोग्रस्ति बाध्यता के लक्षण दूर हो जाते है | परन्तु ऐसा देखा गया है की क्लोमिप्रेमाइन OCD के उपचार के लिए बहुत ही पूर्ण दावा नहीं है | कुछ अध्ययनों में यह पाया गया है की बहुत से रोगी इस औषध को सेवन से भी ठीक नहीं हो पाते है तथा कई रोगी तो इस औषध को उसके पार्श्व प्रभाव (SIDE EFFECT) के डर से सेवन नहीं करते है| कब्जियत ,ऊंघना तथा लैंगिक अभिरुचि में कमी इसके प्रमुख पार्श्व प्रभाव में है | निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है OCD के उपचार के कई प्रविधियाँ है जिनमे व्यवहार चिकित्सा सबसे अधिक प्रभावी है |